केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ	प्राप्तांक (अंकों में)	प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ	प्राप्तांक (अंकों में)
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13					
14					
15			कुल प्राप्तांक शब्दों में		कुल प्राप्तांक अंकों में
16					

V.No.34007
Dinesh Kumar Kori (U.M.S.)
G.G.H.S.S.Umaria
Mob.N... 63

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्राः नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
V.No.34010 PUSHPA SINGH (UMT) Govt. H.S.S.Ghunguti Mob.No.8839228816	V.No.34011 NIRMLA SINGH (UMS) Govt.H.S.S.Bharewa Mob.No.6264084264

② योग पूर्व पृष्ठ + =

मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उ० क्र. 1

सही विकल ... न

निशा निमंत्र

कमरे में बंद ।

आठ ।

भी ।

नीले शंख जैसा ।

सं ।

उ० क्र. 2

रिक्त स्थान की पूर्ति

(i) अवधि ।

③ + =

योग पूर्व पृष्ठ

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPI

अखबार ।

पतंग ।

स्मृति की रेखाएँ ।

आलम्बन ।

आनन्द रतन यादव ।

उ० क्र. 3

सत्य / असत्य

सत्य ।
सत्य ।
असत्य ।
सत्य ।
असत्य ।
सत्य ।

④ योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ =

प्रश्न क्र.

उ० क्र. 4

(i) जेठ का पुत्र ।

(ii) शब्द चित्र ।

(iii) केशव प्रथम वीर ।

(iv) यात्रा वृतांत ।

(v) अलग - अलग अखबारो में लेखन ।

(vi) उल्टा पिरामिड ।

(vii) धार्मिक अनुष्ठान का स्थान ।

उ० क्र. 5

(i) क्या, कौन, कब, कहाँ, क्यों और कैसे समाचार लेखन के छ ककार है ।

5

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

निबंध कहानी, नाटक, उपन्यास गद्य की चार प्रमुख विधाएँ हैं।

रघुवीर सहाय दूसरे तार सप्तक के कवि हैं।

(iv) सिंधु सभ्यता की ईंटों की बनावट का अनुपात 1:2:4 था।

शब्द और अर्थ के संबन्ध को बताने वाली शक्ति को शब्द शक्ति कहते हैं।

आम के आम गुठलियों के दाम मुहावरे का अर्थ किसी चीज से वस्तु से दुहरा लाभ होना।

(vii) दुर्मिल सवैया छंद का दूसरा नाम चंद्रकला है।

उ० क्र. 6

'छोटा मेरा खेत' कविता में ... क्या है?

छोटा मेरा खेत कविता उमाशंकर जोशी की कविता है, जिसे रघुवीर चौधरी ने हिन्दी में रुपांतरित किया है। इस कविता में कवि ने कृषि कर्म को कवि कर्म के समान माना है। तथा इसी संदर्भ मे उन्होने

6

प्रश्न क्र.

'अंधड़' और 'बीज' शब्द का प्रयोग किया है। अंधड़ भावनात्मक आवेग की आँधी है तथा बीज से तात्पर्य विचार और अभिव्यक्ति है। भावनात्मक आवेग के आँधी से कोई बीज रुपी विचार कवी के मन में ~~आता~~ आता है और वह कविता की रचना करता है।

उ० क्र. 7

रीतिकाल की दो विशेषताएँ निम्न हैं -

(i) सांसारिक सुख का प्राधान्य - वह समय खुशी व उल्लास था। जीवन क्षणभंगुर है जितने समय सुख के भोग सको भोग लो। इस काल के कवि राजाओं के शरण में रहते थे इसलिये इस काल की कविता धन प्राप्ति का साधन बनी।

(ii) कला पक्ष की प्रधानता - इस काल के काव्य में भाव पक्ष कला पक्ष से बोझिल है। यहाँ के कवि श्रृंगार प्रधान रचनाएँ किया करते थे जो कि मुख्यत: ब्रज भाषा में होती थीं।

इस काल के दो रचनाकार निम्न हैं -

केशवदास - कविप्रिया, रसिकप्रिया।

बिहारी - बिहारीसतसई है।

पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ पर प्राप्तांक = कुल अंक

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

उ० क्र. 8 अथवा

जैनेन्द्र कुमार के अनुसार बाजार का जादू आँख की राह काम करता है। यह रूप का जादू है लेकिन जिसप्रकार चुंबक का जादू लोहे पर चलता है उसी प्रकार बाजार के जादू की भी अपनी मर्यादा है। यह उन लोगों पर काम करता है जिनका मन खाली होता है। यह जादू उन लोगों को आमंत्रित करता है लेकिन यह आमंत्रण मूक होता है। यह जादू लोगों में चाह जगाता है चाह यानि अभाव। लोगों को लगने लगता है कि उनके यहाँ कितना परिमित है और यहाँ कितना अतुलित है। और यह जादू उन लोगों पर काम नहीं करता जिनका मन भरा होता है।

उ० क्र. 9

नाटक और एकांकी में अंतर निम्न है -

क्र.	नाटक	एकांकी
1.	नाटक में कई अंक होते हैं।	1) एकांकी में केवल एक अंक होता है
2.	नाटक में मुख्य कथा के साथ-साथ गौण कथाएँ भी होती हैं।	2) एकांकी में केवल एक मुख्य कथा होती है।
	उदाहरण - चंद्रगुप्त	उदाहरण - पृथ्वीराज की आँखें

1062-A-24 MP Bhopal ANSERBOOK - 32 Pages WEB NEW \ 1N \ 1 \ Back \ 01-Jan-25 \ administrator \ 890x608

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

B S E

उ० क्र. 10

सिल्वर वैडिंग के आधार पर यशोधर बाबू के व्यक्तित्व की दो विशेषताएँ निम्न हैं -

(i) परम्परावादी विचारधारा :- यशोधर जी परम्परावादी विचारधारा के थे। उन्हें अपनी पत्नी व बेटी का लाली लगाना, ऊँची एड़ी का सैंडल पहनना पसंद नहीं था।

(ii) सिद्धांतवादी - यशोधर जी सिद्धांतवादी थे। वे अपने नियमों का पालन करते थे उन्हें केक खाना नहीं पसंद था तथा न ही वे आधुनिक होना चाहते थे।

उ० क्र. 11 अथवा

विरोधाभास अलंकार -

जहाँ किसी व्यक्ति क्रिया व पदार्थ में वास्तविक विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास हो वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उदाहरण - मैं निज रोदन में राग लिये फिरता हूँ;
शीतल वाणी में आग लिये फिरता हूँ।
हरिवंश राय बच्चन

उ० क्र. 12 अथवा

रुबाइयाँ छंद - रुबाइयाँ छंद अरबी के 'रुबा' शब्द से लिया गया है। जिसका अर्थ चार होता है। इसमें चार चरण होते हैं। इसे फारसी में तराना भी कहते हैं। यह उर्दू और फारसी की विशिष्ट छंद शैली होती है। जिसके पहले, दूसरे व चौथे चरण समतुकान्त होते हैं लेकिन तीसरा छंद अतुकान्त होता है। इसके चारों चरण सानुप्रास होते हैं लेकिन अच्छा यही होता है कि चौथा चरण सानुप्रास न हो।

उदाहरण -
जितनी दिल की गहराई हो उतना गहरा है प्याला।
जितनी मन की मादकता हो उतनी मादक है हाला॥
जितनी उर की भावुकता हो उतनी सुंदर साकी है।
जितनी है जो रसिक, उसे है उतनी रसमय मधुशाला॥

प्रश्न क्र.

उ० क्र. 13 अथवा

(i) वह भोजन करके विद्यालय जाता है।
→ वह भोजन करता है और विद्यालय जाता है।

(ii) गणित का प्रश्नपत्र कठिन है।
→ गणित का प्रश्नपत्र सरल ~~नहीं है~~ नही है।

BSE

उ० क्र. 14 अथवा

इण्टरनेट पत्रकारिता -

इण्टरनेट पर सूचनाओं व खबरों का आदान - प्रदान इण्टरनेट पत्र - कारिता कहलाता है। इसमे इण्टरनेट पर स्तंभ, फीचर, लेख आदि भी सम्मिलित हैं। इण्टरनेट पत्रकारिता को साइबर पत्र - कारिता, ऑनलाइन पत्रकारिता भी कहते हैं। इसके साथ ही इण्टरनेट पर खबरों की पुष्टि, सत्यापन व खबरों की बैकग्राउण्ड तैयार करना तथा सूचनाओं को अन्य लोगों तक पहुँचाना भी शामिल है।

(11) [ ] + [ ] = [ ]

पृष्ठ 11 क अक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

30 क्र. 15

राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा में दो अंतर निम्न हैं:-

राष्ट्रभाषा	राजभाषा
1) इसे अँग्रेजी में ~~ऑफिशियल~~ नेशनल लैंग्वेज कहते हैं।	1) इसे अँग्रेजी में ऑफिशियल लैंग्वेज कहते हैं।
2) यह बहुसंख्यक लोगों की भाषा होती है। जैसे - भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी है।	2) यह अल्पसंख्यक लोगों की भाषा होती है। जैसे - महाराष्ट्र में मराठी।

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

30 क्र. 16 अथवा

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (जन्म - 1899 महिषादल)

(i) दो रचनाएं →

अनामिका, गीतिका, परिमल (कविता संग्रह)
मतवाला, समन्वय (पत्रिका संपादन)

(ii) भावपक्ष - कलापक्ष →

• भावपक्ष -

1) प्रकृति चित्रण - निराला जी प्रकृति के चितेरे कवि थे, इन्होंने प्रतीकों के माध्यम से प्रकृति का स्वच्छ एवं सुंदर चित्रण किया है।

उदाहरणार्थ - तिरती है समीर सागर पर,
अस्थिर सुख पर दुख की छाया।

2) प्रेम सौंदर्य - निराला जी के काव्य में प्रेम का अनूठा चित्रण हुआ है, वे छायावादी कवि हैं उनके काव्य में प्रेम के सूक्ष्म रूप का वर्णन हुआ है।

BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

उदाहरणार्थ - नयनों का नयनो से गोपन प्रिय संभाषण,
पलकों पर नव पलकों का प्रथमोत्थान पतन ।

• कलापक्ष -

1) भाषा → इन्होंने आम-बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। जो पढ़ने वाला आसानी से आत्मसात कर लेता है।

2) शैली → इन्होंने विविध शैलियों का प्रयोग किया है। जिनमें से प्रतीकात्मक व कवित्त शैली प्रमुख है।

3) अलंकार → निराला जी ने अलंकारों में अनुप्रास, उपमा व रूपक आदि का प्रयोग किया है।

4) छंद योजना → ये मुक्त छंद के प्रवर्तक हैं तथा इसका प्रयोग इन्होंने अधिकतर रचनाओं में किया है।

(iii) साहित्य में स्थान -

निराला जी छायावाद के चार स्तंभों में से एक हैं। ये मुक्त छंद के प्रवर्तक भी हैं। निराला जी की कविता के कई रूप हैं। ये आत्मशांति व अद्भुत जिजीविषा के कवि हैं। ये अपनी अद्वितीय रचनाओं के साथ सदैव स्मरणीय हैं।

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उ० क्र. 17

जैनेन्द्र कुमार -

दो रचनाएँ →

(i) मुक्तिबोध त्यागपत्र (उपन्यास)
फाँसी , दो चिड़िया (कहानी संग्रह)

(ii) भाषा - शैली →

भाषा -

जैनेन्द्र जी की भाषा के दो रूप देखने को मिलते हैं। एक रूप वह है जो उनकी कहानी, उपन्यास व नाटक में देखने को मिलता है जिसमे उन्होने सरल व साफ - सुथरी भाषा का प्रयोग किया है। दूसरा वह जो उनके निबंधों में मिलता है जहाँ उन्होने चिंतन विश्लेषण व सोच - समझकर लिखा है। ~~इन्ह~~ इसके अलावा उन्होने देशज, संस्कृत, तत्सम - तद्भव व क्षेत्रीय शब्दों का प्रयोग किया है। इन्होने अँग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

शैली → इन्होंने विविध शैलियों का प्रयोग किया है -

(i) विचारात्मक शैली → निबंधों में तथा अन्य रचनाओं में इन्होंने विचार - विमर्श के साथ लिखने के लिए इस शैली का प्रयोग किया है।

(ii) मनोवैज्ञानिक शैली → पात्रों के मन के द्वन्द को बताने के लिए इस शैली का प्रयोग किया है।

(iii) भावात्मक शैली → विचारों की तुलना में भावनाओं को महत्व देने के लिये भावों से ओत - प्रोत रचनाओं में इस शैली का प्रयोग किया है।

(iv) विवरणात्मक शैली → स्थान, घटना, समय आदि का विवरण देने के लिये इस शैली का प्रयोग किया है।

(iii) साहित्य में स्थान →

प्रेमचंद के बाद दूसरे महत्वपूर्ण कथाकार ~~प्रेमचंद~~ जैनेन्द्र जी गंभीर चिंतक व विचारक थे। इन्होंने गाँधीवाद को हृदयंगम कर लिया था। त्यागपत्र उपन्यास के बाद ये मनोवैज्ञानिक रचनाकार के रूप में प्रसिद्ध हुये। ये बाजार का पोषण करने वाले अर्थशास्त्र को अनीतिशास्त्र बताते हैं। ये अपनी रचनाओं के साथ सदैव स्मरणीय रहेंगे।

B S E

(16)

प्रश्न क्र.

उ० क्र. 18

पिताजी एवं पुत्र के मध्य संवाद –

पिताजी → बेटा, तुम्हारी वार्षिक परीक्षा कब है?
पुत्र → 25 मार्च से है।
पिताजी → अच्छा! बहुत जल्दी है इस बार परीक्षा।
पुत्र → नहीं पिताजी हर वर्ष मार्च में ही होती है।
पिताजी → तुम्हारी तैयारी कैसी है फिर?
पुत्र → मैं अपने सारे विषयों को दोहरा रहा हूँ और देख रहा हूँ कि मैं कहाँ गलती कर रहा हूँ।
पिताजी → मतलब तुम्हारा पाठ्यक्रम पूरा हो चुका है।
पुत्र → जी पिताजी।
पिताजी → तुम्हारी गणित का क्या हाल है?
पुत्र → पिताजी आप तो जानते ही हैं कि गणित में मुझे परेशानियाँ थीं।
पिताजी → इसीलिये पूछ रहा हूँ, अभी समय है बताओ?
पुत्र → जी पिताजी मैंने पाठ्यक्रम तो पूरा कर लिया है। लेकिन कुछ प्रश्नों में मेरे उत्तर गलत आते हैं।
पिताजी → बेटा, गणित तो प्रयासों से बनती है।
पुत्र → जी।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

पिताजी → तुम्हे वही प्रश्न बार - बार लगाने चाहिये ।
पुत्र → जी पिताजी मैं अब से करूँगा ।
पिताजी → अगर तुम्हे ज्यादा परेशानी हुई तब तुम्हे अपने शिक्षक से पूछना चाहिये ।
पुत्र → जी पिताजी ।
पिताजी → जाओ , पढ़ो ।
पुत्र → जी ।

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उ० क्र. 19

गद्यांश के प्रश्न उत्तर -

(i) " मानव - श्रम "

(ii) मनुष्य और उसका शरीर विधाता की अनुपम रचना है।

(iii) जब इस दुर्लभ तन का जो मनुष्य को विधाता ने दिया है श्रम में न लगाकर आलस्य प्रमाद अथवा घटिया कामों में लगाता है तब वह विधाता के प्रति अन्याय ही होता है।

B S E

उ० क्र. 20

संदर्भ - प्रसंग एवं व्याख्या -

संकेत - भूत कहीं , ... दोऊ ।।

EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

संदर्भ - प्रस्तुत सवैया तुल आरोह के कवितावली से ली गई है, जिसके कवि तुलसीदास हैं।

प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने स्वयं के बारे में बताया है।

भावार्थ - कवि कहते हैं कि वे संयासी हैं, लेकिन लोग उन्हें या तो राजपूत कहते हैं या जोलहा या कोई और। लेकिन एक अवधूत की तो अपनी कोई जाती नहीं होती है। वह तो सदैव संपूर्ण समाज की बात कहता है। तुलसी जी तो राम के भक्त हैं और उन्हीं की पूजा में लीन रहते हैं, उन्हें तो इस समाज से कोई मतलब नहीं है। वे तो बस राम के गुलाम बनकर रहना चाहते हैं। वे तो ये भी कहते हैं कि उन्हें अपने बेटे का विवाह किसी की बेटी से नहीं करना है जिससे किसी और की जाति बिगड़ जाये। वे तो सिर्फ राम के गुलाम हैं, उन्हें इस संसार की माया से क्या मतलब, इस संसार की माया, ये ही जाने। वे तो स्वाभिमानी हैं, वे माँग के खाते हैं, मस्जिद में सोते हैं। वो तो प्रभु राम की भक्ति में रहते हैं और उनसे इस संसार की दुखों को दूर करने की प्रार्थना करते हैं। उन्हें लगता है कि प्रभु राम ही इस संसार में शांति ला सकते हैं। वे तो राम को स्वामी और स्वयं को दास कहते हैं।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

विशेष -

(i) सवैया छंद ~~देखने~~ है।

(ii) तुलसी की राम के प्रति अनन्य भक्ति दिखाई गई है।

(iii) भक्ति रस से ओत - प्रोत है।

(iv) तुलसी ने स्वयं को अवधूत की संज्ञा दी है।

(v) "लेना एक न देना दो" मुहावरे का सुंदर प्रयोग किया गया है।

B
S
E

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उ० क्र. 23

(i) वर्तमान युग एवं इंटरनेट –

"विज्ञान का एक और विलक्षण वरदान है इंटरनेट
खोजिए जानकारी, पाइए ज्ञान और कीजिए चैट"।

रूपरेखा –
i) प्रस्तावना
ii) इंटरनेट क्या है
iii) प्रयोग
iv) ~~उपसंहार~~ ~~दोष~~ कमियाँ
v) उपसंहार

प्रस्तावना – इंटरनेट ~~का~~ ~~उपय~~ कम्प्यूटरो का नेटवर्क है यह सूचना लेने के काम आता है तथा सूचनाओं के संश्लेषण में काम आता है। इण्टरनेट का उपयोग विगत वर्षों से बढ़ गया है। यह विश्व स्तर पर फैला हुआ है।

इंटरनेट क्या है – इंटरनेट में हमें सूचनायें मिलती हैं जिन्हें हम एक जगह से दूसरे जगह पहुँचा सकते हैं। इंटरनेट को नेटवर्क ऑफ सर्विस कहते हैं। यह एक वर्ल्ड वाइड वेब है। जिसे w.w.w कहते हैं।

B S E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

B S E

प्रयोग

इंटरनेट का प्रयोग विश्व स्तर पर किया जाता है इसके द्वारा ही कंम्प्यूटरों को चलाया जाता है तथा ई. मेल के द्वारा एक दूसरे तक पहुँचाया जाता है। इंटरनेट के आने के बाद ही कंम्प्यूटरों की उपयोगिता बढ़ी है तथा हमारा देश विश्वस्तर पर दूसरे देशों से मुकाबला करने के लिये तैयार है। इंटरनेट का प्रयोग इंटरनेट पत्रकारिता में भी होता है। इंटरनेट पत्रकारिता का विकाश भारत में तो 1993 में हुआ था जो कि पहला चरण था तथा दूसरा चरण 2003 में हुआ। इण्टरनेट में पत्रकारिता से लोगों को घर-बैठे ही जानकारी मिलने लगी। प्रभा साक्षी नामका अखबार तो केवल इण्टरनेट पर ही उपलब्ध है। भारत की पहली वेबसाइट रीडिफ ~~डॉट कॉम~~ थी। लेकिन इंटरनेट में अभी पत्रकारिता अपने शैशवकाल में है। भारत में इण्टरनेट पत्रकारिता का कोई मानकी 'की बोर्ड' नहीं है। इंटरनेट अंतरक्रियात्मक और सूचनाओं का विशाल भण्डार है क्योंकि यहाँ सिर्फ सूचना मिलती ही नहीं बल्कि उसकी पुष्टि व उसका बैकग्राउण्ड भी मिनटों में तैयार हो जाता है।

प्रश्न क्र.

(iv) ~~अपसंहार~~ ~~दोष~~ कमियाँ -

इण्टरनेट ने बहुत सुविधाएँ दी है हमें । रोबोट तो मानव का पर्याय कहलाता है लेकिन जब कोई वस्तु इतनी अच्छी होती है तब उसका बुरा होना भी स्वाभाविक ही है। इंटरनेट पर आजकल अश्लीलता फैलायी जाती है इसलिये जरूरी हो गया है कि इसका उपयोग सावधानी से किया जाये ।

(v) उपसंहार -

इंटरनेट एक अद्‌भुत माध्यम है, इसके अनेक लाभ हैं, इसलिये इसके बारे में जानना बहुत जरूरी है। विद्यालयों में विद्यार्थी को इससे अवगत कराना चाहिये क्योंकि बच्चे ही देश का भविष्य हैं उन्हें सब की जानकारी होनी चाहिये । और ज्यादा से ज्यादा लोगों को इसके बारे में जागरुक कराना चाहिये। जिसका पहला चरण है लोगों को कंप्यूटर की शिक्षा देनी चाहिये तथा उन्हें इसका महत्व बताना चाहिये ।

" इण्टरनेट वरदान नहीं,
समाधान है । "

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र० क्र 22 अथवा

78, (H.R.) नगर
सतना, रीवा
पिन कोड - 485775
दिनांक - 25.03.2025

प्रिय मित्र
सप्रेम नमस्कार।
आशा है कि तुम अच्छे होगे। मैं भी बढ़िया हूँ। और मुझे तुम्हे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि मैं अपने विद्यालय की वाद - विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर आया हूँ। मुझे पता है तुम्हे यह जानकार बहुत खुशी हुई होगी। मैंने मन लगाकर इस प्रतियोगिता की तैयारी की थी और देखो मुझे इसका परिणाम भी मिला। तुम बहुत दिनों से हमें मिलने नहीं आये हो, कृपया करके रीवा जल्दी आओ और मुझसे मिलो।
बाकी सब प्रसन्नता है,
अपने माता पिता को मेरा नमस्ते कहना।
पत्र की ~~इंतजार~~ में प्रतीक्षा,

तुम्हारा मित्र
सोहन

BSE

25 + अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

B
S
E

३० के
22

संदर्भ -

प्रस्तुत गद्यांश हमारे पाठ्य - पुस्तक आरोह के पाठ पहलवान की ढोलक से ली गई है। इसके लेखक फणीश्वरनाथ रेणु हैं।

प्रसंग -

गद्यांश में जब एक गाँव में अकाल पड़ जाता है तब उस गाँव की स्थिति का वर्णन किया गया है।

भावार्थ -

अमावस्या की रात थी काली व ठंडी। रात में किसी की चूँ भी नहीं सुनाई दे रही थी क्योंकि सभी लोग डरे हुए थे और अपने घरों के अंदर चुप-चाप से रहे थे क्योंकि गाँव को हैजे और मलेरिया ने जकड़ रहा था। किसी के पास हिम्मत नहीं थी एक-दूसरे के घर चले जायें लेकिन इस रात पहलवान की ढोलक चुनौती दे रही थी। ऐसा लग रहा था कि पहलवान की ढोलक की आवाज में कोई बिजली थी जो लोगों में हिम्मत डाल रही थी। मरने वाला व्यक्ति आवाज सुनकर मानो मरने से डरता ना।

प्रश्न क्र.

इस गाँव में जहाँ सब शांत था, ढोलक की आवाज अलग ही प्रेरणा दे रही थी।
ढोलक ना तो औषधि थी ना ही किसी का उपचार लेकिन फिर भी उसमे कोई अद्भुत शक्ति थी जो लोगो में संजीवनी शक्ति डाल रही थी।
जैसे चट्-धा, गिड़-धा (आ जा भिड़ जा, आ जा भिड़ जा) चटाक-चट-धा, चटाक चट धा (उठा पटक दे, उठा पटक दे)।
ऐसे प्रेरक शब्दों को सुनकर मानो उनमे जीने की इच्छा आ जाती। पहलवान लुट्टन सिंह भी इसी आवाज के कारण अजेय पहलवान बना था। पहलवान ढोलक को अपना गुरु मानता है। या फिर हम कह सकते हैं ढोलक बजाना उसकी कला थी, जिससे वह खुश व मस्ती में रहता था।

B
S
E

27 + पृष्ठ 27 क अंक =

प्रश्न क्र.

विशेष -

(i) व्याख्यात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।
(ii) यह गद्यांश एक कहानी संग्रह का है।
(iii) लोगों की दुर्दशा का सजीव चित्रण हुआ है।
(iv) ढोलक के रूप में संजीवनी शक्ति मिलने की बात हुई है।
(v) अकाल पड़ने पर हुई स्थितियों का सजीव चित्रण किया गया है।

B S E